105 सूरए अल फ़ील

□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ "अल-फ़ील " (सूरा 105) की आयतों का विश्लेषण और आलोचना

□ चयनित न्याय तत्व : **प्रमाण (Pramana) एवं अनुमान (Anumana)**

□ संदर्भ शास्त्र : **न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, भगवद्गीता, मनुस्मृति**

□ आयत **1**

आयत:

"ऐ रसूल क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?"

न्याय विश्लेषण

प्रत्यक्षा तत्व: नहीं

तर्क: ऐतिहासिक घटना का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रमाण अनुपलब्ध है

1. प्रतिज्ञा (Pratijna):

ईश्वर ने हाथी सेना वालों को नष्ट किया

2. हेत्व (Hetu):

यह घटना एक दैवी दंड के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसमें ईश्वर ने आक्रमणकारियों को मिटा दिया

3. उदाहरण (Udaharana):

इतिहास में अब्रहा या यमन के सेनापति के हाथियों के साथ मक्का पर आक्रमण का कोई वैदिक या वैश्विक प्रमाण नहीं है

4. उपनय (Upanaya):

यदि ऐसी घटना हुई होती, तो उसका स्पष्ट ऐतिहासिक वर्णन स्वतंत्र स्रोतों (रोमन, फारसी, हिंदू इतिवृत्त आदि) में मिलता

5. निगमन (Nigamana):
यह आयत प्रमाण और ऐतिहासिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, अतः न्याय दर्शन के प्रमाणीकरण तत्व का उल्लंघन करती है।

 आयत **2**

आयत:
"क्या उसने उनकी तमाम तद्बीरें ग़लत नहीं कर दीं (ज़रूर)"

न्याय विश्लेषण

चयनित तत्व: Hetu (हेतु - कारण)

1. प्रतिज्ञा:
ईश्वर ने योजनाबद्ध शत्रुओं की सारी चालें विफल कर दीं।

2. हेत्व:
कोई भी योजना ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध नहीं चल सकती।

3. उदाहरण:
यह अवधारणा न्याय दर्शन के हेतु-कार्य सिद्धांत से टकराती है, क्योंकि उसमें किसी कार्य के सफल या विफल होने के पीछे स्पष्ट कारण (कार्यकारणभाव) की अपेक्षा होती है।

4. उपनय:
यदि कारण और कार्य के बीच ईश्वर मनमाने हस्तक्षेप से बाधा डाल सकता है, तो यह स्वाभाविक नियमों का उल्लंघन है।

5. निगमन:
यह आयत ईश्वर को एक पक्षपाती हस्तक्षेपकर्ता के रूप में चित्रित करती है, जो न्याय दर्शन में असंगत है।

 आयत **3**

आयत:
"और उन पर झुंड की झुंड चिड़ियाँ भेज दीं"

चयनित न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

1. प्रतिज्ञा:
ईश्वर ने चिड़ियों के माध्यम से आक्रमणकारियों पर प्रहार करवाया।

2. हेत्व:
असंभव प्रतीत होने वाली कथा को चमत्कार के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. उदाहरण:
ऐतिहासिक या प्राकृतिक विज्ञान में ऐसे किसी सामूहिक पक्षी आक्रमण की कोई पुष्टि नहीं है जिससे संगठित सैन्य बल नष्ट हो जाए।

4. उपनय:
ऐसा अनुमान केवल भावनात्मक विश्वास पर आधारित है, न कि वैज्ञानिक/दार्शनिक तर्क पर।

5. निगमन:
यह कथानक अनुमान और न्याय के तुलनात्मक दृष्टिकोण में असंगत, अतार्किक और असिद्ध है।

 आयत **4**

आयत:
"जो उन पर खंजन की कंकरियाँ फेंकती थीं"

चयनित न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

1. प्रतिज्ञा:
चिड़ियों ने कंकर फेंक कर भारी सेना को नष्ट कर दिया।

2. हेत्व:
सामान्यतः चिड़ियों द्वारा पत्थर फेंकने की कोई प्राकृतिक घटना नहीं पाई जाती जो मनुष्य या हाथियों को मारे।

3. उदाहरण:
वैशेषिक दर्शन अनुसार पदार्थों की क्रियाशीलता कारण-कार्य पर आधारित होती है। पक्षी का "कंकर" से सेना को मारना व्याप्ति सिद्धांत के अनुसार असंभव है।

4. उपनय:
चिड़ियों का कंकर फेंककर मानव व हाथी सेना का नाश कर देना व्याप्ति (नियत संबंध) सिद्धांत से असंगत है।

5. निगमन:
यह आयत व्याप्ति और कारणत्व नियम का उल्लंघन करती है।

 आयत **5**

आयत:
"तो उन्हें चबाए हुए भूसे की तरह कर दिया"

चयनित न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya - ज्ञान का विषय)

1. प्रतिज्ञा:
आक्रमणकारी सेना पूरी तरह नष्ट हो गई।

2. हेत्व:
न्याय दर्शन में प्रमेय वह विषय होता है जिसे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द से सिद्ध किया जाए।

3. उदाहरण:
ऐसा कोई ऐतिहासिक विवरण नहीं मिलता जहाँ चिड़ियों द्वारा सेना को पूर्ण रूप से चबाए हुए भूसे की तरह नष्ट किया गया हो।

4. उपनय:
यह कथन केवल रूपक या डर उत्पन्न करने वाली कल्पना प्रतीत होती है, तात्त्विक सत्य नहीं।

5. निगमन:
यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय और प्रमाण तत्व को नहीं पूरा करती, और ज्ञान की उचित परख से रहित है।

सारणी : न्याय दर्शन के तत्वों द्वारा आयतों की आलोचना

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण (Pramana)	ऐतिहासिक प्रमाण का पूर्ण अभाव
2	हेतु (Hetu)	योजना विफलता का कारण ईश्वर की इच्छा मानना न्यायसंगत नहीं
3	अनुमान (Anumana)	पक्षियों द्वारा युद्ध में विजय अवैज्ञानिक व अनअंदाजनीय
4	व्याप्ति (Vyapti)	चिड़ियों द्वारा कंकर से सेना को नष्ट करना व्याप्ति के विपरीत
5	प्रमेय (Prameya)	"चबाया भूसा" रूपक तर्कसंगत ज्ञान का विषय नहीं बनता

समग्र निष्कर्ष :

सूरा अल-फील की आयतें न्याय दर्शन के प्रमेय, अनुमान, व्याप्ति, और प्रमाण जैसे सिद्धांतों पर खरी नहीं उतरतीं।

- **इन आयतों में ऐतिहासिक घटनाओं के अति-चमत्कारी चित्रण के माध्यम से ईश्वर की शक्ति को दर्शाने का प्रयास किया गया है,**
- **परंतु न्याय दर्शन की वैज्ञानिक, तात्त्विक और प्रमाणिक कसौटी पर ये कथाएँ अविश्वसनीय, अतार्किक और अप्रमाणित सिद्ध होती हैं।**
- **अतः ये आयतें सार्वभौमिक मानवीय विचार और तर्कशक्ति के विरुद्ध जाती हैं।**

यदि आप अगली आयत भेजना चाहें, तो कृपया उसका अनुवाद और आयत संख्या भेजें।